मुर्गी पालन कैसे करें

मुर्गी पालन का उद्देश्य :- अंडे और मांस में उच्च कोटी के प्रोटीन होना और उसे उपलब्ध करवाना। मुर्गी पालन को बढ़ावा देना। मुर्गी पालन में आर्थिक विकास दर सुनिश्चित करवाना। ग्रामीण इलाकों में रोजगार के वसर प्रदान करवाना। कम लागत में अच्छी खाद तैयार करना।

कुछ महत्वपूर्ण मुर्गीपालन शुरू करने से पहले :- मुर्गी पालन करने के लिए पहले इसे छोटे स्तर के रूप मे शुरू करें। मुर्गी फार्म खोलने से पहले आप किसी कृषि जानकार से सलाह जरूर लें। पोल्ट्री व्यवसाय में आप कितना पैसा कमा सकते हैं इसकी कोई समय सीमा नहीं होती है। पोल्ट्री फार्म दो प्रकार के होते हैं। ब्रायल पोल्ट्री, पोल्ट्री पालन।

मुर्गी पालन के लिए जगह : पाल की जगह मेन रोड़ और शहर से बाहर होना चाहिए। बिजली की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। फार्म हमेशा ऊंचाई वाली जगह पर होना चाहिए। दो पोल्ट्री फार्म एक दूसरे के पास में नहीं होना चाहिए। फार्म की लंबाई पूरब से पश्चिम की ओर होना चाहिए। मध्य में ऊंचाई 12 फीट और साइड 8 फीट ऊंची होनी चाहिए। चौड़ाई 25 फीट और शेड का अंतर कम से कम बीस फीट होना चाहिए। मुर्गियों के शेड और बर्तनों की साफ सफाई हमेशा करते रहें। एक शेड में केवल एक ही ब्रीड के चूजे रखने चाहिए।

फार्म में प्रयोग आने वाले यंत्र :- दाने फीडर, पानी के बर्तन, ब्रुड, अंडे की ट्रे, चोंच काटने वाला यंत्र, टीकाकरण के लिए वैक्सीनेटर आदि।

आहार :- मुर्गी पालन में सबसे ज्यादा खर्च उनके दाने पर होता है। चूजों के लिए बाजार में फिनिशन और स्टार्टर राशन मिलता है। दाने में प्रोटीन और इसकी गुणवत्ता का भी ध्यान रखना जरूरी है। इसके अलावा आप चूजों को मक्का, सूरजमुखी, तिल, मूंगफली, जौ और गेंहूँ आदि को भी दे सकते है। गर्मियों के समय में मुर्गी पालन करने वाले लोगों को चाहिए कि वे मुर्गियों को तेज तापमान और अधिक गर्मी से बचाय जाय। मौसम में बदलाव की वजह से मुर्गियों की मौत तक हो सकती है। इस वजह से मुर्गी पालन करने वालों को अधिक हानि हो सकती है। इसलिए मुर्गियों की छत का गर्मी से बचाने के लिए छत पर घास व पुआल आदि को डाल सकते हे। या छत पर सफेदी करवा सकते हे। सफेद रंग की सफेदी से छत ठंडी रहती हे। मुर्गियों को चारा गीला करके देना चाहिए। मुर्गिया गीला दाना अधिक से अधिक खाती है। ध्यान रखें कि गीला दाना शाम तक खत्म हो जाए नहीं तो उससे बदबू आ सकती है।

मुर्गियों चूजों में बीमारियां और उनसे बचाव मुर्गियों में कई तरह की बीमारियां पाई जाती है। जैसे पुलोराम, रानीखेत, हैजा, मैरेक्स, टाईफाइड और परजीविकृमी आदि रोग होते हैं। जिससे मुर्गीपालकों को हर साल भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

उपचार चूजों को रखने से पहले शेड को अच्छे से साफ करें। गर्मियों में चूजों के लिए पानी के बर्तनों की संख्या को बढ़ा दें। क्योंकि गर्मियों में पानी न मिलने से हीट स्ट्रोक लगने से मुर्गियों की मौत हो जाती है। जब तेज गर्मी होती है तब शेड की खिड़कियों पर टाट को गीला करके लटका दें। लेकिन इस बात का ध्यान जरूर रखें कि टाट खिड़डियों से न चिपके। गर्मियों में पानी में गुड़ और विटामिन मिलाकर मुर्गियों को देना चाहिए। मुर्गियों को दाना इस तरह से दें कि वह शाम तक खत्म हो जाए। अन्यथा उसे फैंक दें। यदि मुर्गियों में गर्मी के लक्षण दिखाई दे तो आप उसे उठाकार पानी में एक डुबकी लगवा दें और उन्हें छाव में रखने के बाद शेड में रख लें। इस काम को बहुत तेजी से करें। नहीं तो मुर्गी मर भी सकती है। मुर्गियों में कैल्शियम की कमी होने लगती है ऐसे में उन्हें शैल ग्रिट, चूने का पत्थर तीन से चार प्रतिशत और चाक आदि अलग से खिलाना चाहिए।